Vijay Kumar Jha
Asstt Prof
Deptt in History
V.S.J. College Rajnagar
Degree Part III
Paper - VI

Non-Co-operation movement of 1920.

प्रथम विश्व युद्ध मे अंग्रेजों ने भारतीयों कि सहायता इस शर्त पर ली थी कि युद्ध के बाद अंग्रेज भारतीयों कि स्थिति मे सुधार करेंगे। विश्व युद्ध समाप्त होते ही अंग्रेजों के रवैया बदल गया और वह रोलेट एक्ट पास कर भारतीयों का शोषण करने लगा जिससे भारतीय नाराज हुये और उन्हें अब अंग्रेजों पर विश्वास नहीं रहा। गांधीजी भी अंग्रेजों के इस विश्वासघाती से नाराज हुये और अब वे अंग्रेजों को असहयोग करने का मन बना लिया। मुख्य कारण निम्न थे :–

(1) आर्थिक संकट :– प्रथम विश्व युद्ध मे अंग्रेजों को काफी धन खर्च करना पड़ा था जिसका अधिकांश भाग भारत से ही गया था जो भारत के आर्थिक स्थिति पर प्रभाव डाला। धन संग्रह के लिये जनता पर कर का बोझ लाद दिया गया। इस आर्थिक शोषण से मुक्ति के लिये पूंजीपति, जमींदार ने ब्रिटीश सरकार को चेतावनी दिया। जिससे प्रोत्साहित होकर राष्ट्रव्यापी आर्थिक संकट से छुटकारा के लिये असहयोग आन्दोलन करने का भारतीय जनमानस ने निर्णय लिया।

(2) सरकार कि दमन नीति :– भारत में लोकतंत्र स्थापित करने के वादे से अंग्रेज पिछे हट गया और भारतीयों पर दमन एवं प्रतिबंध लगाना प्रारम्भ किया। एक ओर सुधार का आश्वासन मिलता था तो दूसरी ओर आन्दोलन को कुचलने का प्रयास हो रहा था। सैनिक शासन के अत्याचारी स्वरुप से भारतीय घबड़ा गये थे और वे हर मौके पर अंग्रेजों को असहयोग करना चाहते थे।

(3) रालेट एक्ट :— सरकार कि नीतियों तथा बंगाल के विभाजन से भारतीयों में असंतोष काफी बढ़ गया था और भारतीय

Scanned with Cam

अधिकारी रखा जाय। सरकार ने इस आन्दोलन को कुचलने के लिये सुरक्षा अधिनियम जारी किये जो क्रांतिकारियों को दमन करने वाला था। सरकार इससे भी सन्तुष्ट नहीं हुई और एक दमनकारी विधेयक की रूप रेखा तैयार किया जिसे रौलेट एक्ट कहते हैं। यह भारतीयों के लिये एक काला कानून था जिसका विरोध व्यापक पैमाने पर किया गया। 6 अप्रैल को पूरे देश में हड़ताल हुआ किंतु अंग्रेजों ने गोली चलवाकर कई भारतीयों को घायल कर दिया इसी कारण गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन की शुरुआत कर दिया।

(4) जालियावाला बाग :— रौलेट एक्ट के विरोध में जगह-जगह प्रदर्शन हुये और वातावरण अशांत हो गया। सरकार ने सार्वजनिक सभा पर प्रतिबंध लगा दिया। उद्वेलित जनता ने बिना अंग्रेजों के दमन कारीनीति का परवाह किये बिना 13 अप्रैल को बैशाखी पर्व के दिन जालियावाला बाग में सार्वजनिक सभा का आयोजन कर डाला। जब सभा प्रारम्भ हुई तो बिना चेतावनी के अंग्रेज फौज गोलीबारी प्रारम्भ कर दिया। निहत्थे और शांति पूर्ण समूह को जानबूझ कर कत्लेआम कर दिया गया। इस कांड से दुखी गांधीजी अब अंग्रेजी शासन से घृणा करने लगे विरोध में असहयोग आन्दोलन किये।

(5) खिलाफत आन्दोलन :— प्रथम विश्व युद्ध के बाद इंगलैण्ड ने टर्की को छिन्न-भिन्न कर दिया अतः मुसलमान ने खोये हुये प्रदेश को वापस पाने के लिये खिलाफत आंदोलन प्रारम्भ किया गांधीजी के सलाह पर मुसलमानों ने भी अंग्रेजों को असहयोग करने का निर्णय लिया और हिन्दू मुस्लिम एक जुट होकर असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया।

(6) माण्टे-फोर्ड-सुधार से असंतोष :— प्रथम युद्ध के समय अंग्रेजों ने भारतीयों के सहूलियत देंगे कि प्रलोभन पर युद्ध में भारतीयों से मदद प्राप्त कर ली। लेकिन युद्ध के बाद उनका रवैया ज्यों का त्यों रहा। अंग्रेजों ने एक माण्टफोर्ड सुधार योजना का जाल बिछाकर भारतीयों को उत्तरदायी शासन के स्थापना का वादा तो पूरा किया। किंतु हर विभाग पर पूर्ववत् अंग्रेजों का नियंत्रण कायम रहा और स्थानीय स्व

Scanned with Cam

शासन का वादा अधूरा रहा अतः अंग्रेजों के इस वादा खिलाफी के विरुद्ध भारतीयों ने असहयोग आन्दोलन का निर्णय लिया।

(7) हन्टर समिति की रिपोर्ट :— आन्दोलन कारियों को दबाने के लिए समाचार पत्रों पर कठोर नियंत्रण लगा दिया यही कारण था कि जालियावाला बाग कि घटना कि जानकारी तत्काल सबों को नहीं मिला। इसके प्रतिक्रिया स्वरूप रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने सर, कि उपाधि गांधीजी ने कैसरे हिन्द कि उपाधि से अपने को अलग कर लिया। सरकार ने जालियावाला बाग कि घटना की जाँच के लिये एक हन्टर समिति गठन किया। इस समिति ने अंग्रेजों के इस काले करनाम पर पर्दा डालने का प्रयास किया। जिससे ब्रिटिश सरकार में आस्था रखने वाले भी कट्टर विरोधी बन गये।

अतः इन कारणों से भारतीय असहयोग आन्दोलन करने पर मजबूर हुए। भारतीयों ने लम्बे अर्से तक अंग्रेजों के आश्वासन पर विश्वास किया लेकिन उनके काले करनामे ने भारतीयों के सब्र के बांध को तोड़ दिया और असहयोग आन्दोलन गति पकड़ लिया।

असहयोग आन्दोलन से भारत में कई सुधार और रचनात्मक कार्य हुए घर-घर चरखे तथा करघे कि आवाज सुनाई पड़ने लगी। खादी का उत्पादन बड़े पैमाने पर होने लगा। आंग्ल भाषा को गहरा सदमा लगा। यह प्रथम अहिंसात्मक आन्दोलन था जिसमें सत्य और अहिंसा परिलक्षित होती थी जो 1922 ई० में समाप्त हुआ। किंतु 1924 ई० तक किसी न किसी रूप में चलता रहा। असहयोग आन्दोलन अपने उद्देश्य कि प्राप्ति में असफल रहा किंतु इसके महत्व कम नहीं थे। इस आन्दोलन में प्रथम बार हिन्दु मुस्लिम एक साथ आन्दोलन प्रारम्भ किया था जिससे राष्ट्रीयता कि भावना का विकास हुआ। और भारत को एक राजनीतिक सूत्र में बांधने का प्रयास किया गया।

Scanned with Can